

इस्लाम उदासी और चिंता से कैसे नपिटता है (4 का भाग 4): विश्वास

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम के फायदे सच्ची खुशी और मन की शांति](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2010 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

जैसे-जैसे हम नई सदी में प्रवेश कर रहे हैं और हममें से वो जो गरीबी रेखा के ऊपर हैं, उन्हें अलग ही चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हमारे पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन है, रहने के लिए घर है, हममें से अधिकांश जीवन के छोटे-छोटे सुख का आनंद भी लेते हैं। शारीरिक रूप से भी हम पूरुण हैं, लेकिन आध्यात्मिक और भावनात्मक रूप से हम वंचित हैं। हमारा मन उदासी और दुख से भरा हुआ है। तनाव और चिंता बढ़ रही है। जब हम संपत्ति झिकट्टा कर लेते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि हम खुश क्यों नहीं हैं। जैसे ही एक और छुट्टी आती है हम अकेला और हताश महसूस करते हैं।



वह जीवन जो ईश्वर से बहुत दूर है वह वास्तव में एक दुखद जीवन है। हम कतिना भी पैसा क्यों न जमा कर लें, या हमारा घर कतिना भी भव्य क्यों न हो, अगर ईश्वर हमारे जीवन का केंद्र नहीं है तो खुशी हमेशा के लिए हमसे दूर हो जाएगी। सच्ची खुशी तभी मिल सकती है जब कम से कम हम अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास करें। मनुष्यो का अस्तित्व ईश्वर की पूजा के लिए है। ईश्वर चाहते हैं कि हम इस जीवन में और परलोक में खुश रहें और उन्होंने हमें वास्तविक खुशी की कुंजी भी दी है। यह किसी से छुपा नहीं है या कोई रहस्य नहीं है, यह कोई पहली नहीं है, यह इस्लाम है।

"और ईश्वर ने जनिन और मनुष्य को सिर्फ अपनी पूजा के लिए बनाया है।" (कुरआन 51:56)

इस्लाम धर्म हमारे जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझाता है और हमारी खुशी की खोज को आसान बनाने के लिए दिशानिर्देशों देता है। कुरआन और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा

उन पर बनी रहे) की प्रामाणिक परंपराएं, दुख और चिंता से पूरी तरह से रहति जीवन के लिए हमारी मार्गदर्शक किताबें हैं। हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि हमारी परीक्षा नहीं होगी क्योंकि ईश्वर कुरआन में बहुत स्पष्ट रूप से कहता है कि वह हमारी परीक्षा लेगा। हमारा जीवन उन परिस्थितियों से भरा होगा जिनमें हमें ईश्वर पर निर्भर रहने की आवश्यकता होगी। ईश्वर हमसे वादा करता है कि वह धैर्यवान लोगों को इनाम देगा, ईश्वर हमें उसके प्रति आभारी होने के लिए कहता है, और वह हमें बताता है कि वह उन लोगों से प्यार करता है जो उस पर भरोसा करते हैं।

"...ईश्वर पर भरोसा रखो, निश्चय ही ईश्वर उनसे प्रेम करता है जो उस पर भरोसा करते हैं।"
(कुरआन 3:159)

"आसक्ति तो वही है जो ईश्वर का जिक्र होने पर अपने दिलों में डर महसूस करते हैं और जब वो आयते (कुरआन) सुनते हैं तो उनका विश्वास बढ़ता है। और वे सिर्फ अपने ईश्वर पर भरोसा रखते हैं।" (कुरआन 8:2)

जीवन आनंद और समस्याओं से भरा हुआ है। कभी-कभी यह उतार-चढ़ाव भरा होता है। एक दिन हमारा विश्वास बहुत अधिक होता है तो अगले दिन यह कम हो जाता है और हम दुखी और चिंति महसूस करते हैं। अपने जीवन की यात्रा को एक समान करने के लिए यह विश्वास करना जरूरी है कि ईश्वर जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है। यहां तक कि जब हमारे जीवन में बुरी चीजें होती हैं तो उनके पीछे एक उद्देश्य और ज्ञान होता है। कभी-कभी ये उद्देश्य केवल ईश्वर को ही ज्ञात होता है, और कभी-कभी यह स्पष्ट होता है।

इसके फलस्वरूप जब हम यह जान जाते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई और शक्ति नहीं है, तो हम ज्यादा सोचना बंद कर देते हैं। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने एक बार अपने एक युवा साथी को याद दिलाया कि ईश्वर सर्वशक्तिमान हैं और उनकी अनुमति के बिना कुछ भी नहीं होता है।

"ऐ जवान, ईश्वर की आज्ञाओं को मानो, और वह इस जीवन में और परलोक में भी तुम्हारी रक्षा करेगा। ईश्वर की आज्ञाओं को मानो और वह तुम्हारी सहायता करेगा। जब तुम कुछ मांगो तो उसे ईश्वर से मांगो, और यदि तुम मदद मांगो तो ईश्वर से मदद मांगो। जान लो कि अगर लोग इकट्ठे होकर भी तुमको फायदा पहुंचाना चाहें तो वे तुम्हें केवल वही फायदा पहुंचा सकते हैं जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए लिख दिया है, और यदि वे इकट्ठे होकर भी तुमको नुकसान पहुंचाना चाहें तो वे तुम्हें केवल वही नुकसान पहुंचा सकते हैं जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। कलम वापस ले ली गई है और पन्ने सुख गए हैं।"[\[1\]](#)

जब हम ये जान जाते हैं कि ईश्वर का सभी चीजों पर नियंत्रण है और वह चाहता है कि हम हमेशा के लिए स्वर्ग में रहें, तो हमें अपने दुखों और चिंता को पीछे छोड़ देना चाहिए। ईश्वर हमसे प्यार करता है और हमारा भला चाहता है। ईश्वर ने हमें स्पष्ट मार्गदर्शन दिया है और वह सबसे दयालु और कृपा करने वाला है। यदि चीजें हमारे अनुसार नहीं होती हैं और अगर हमें जीवन में आने वाली चुनौतियों का कोई लाभ नहीं दीखता है, तो हम आसानी से निराश हो सकते हैं और तनाव और चिंता के शिकार हो सकते हैं। ऐसे समय में हमें ईश्वर पर भरोसा करना सीखना चाहिए।

"यदि ईश्वर आपकी सहायता करता है तो कोई भी आपको हरा नहीं सकता; और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो उसके बाद कोई नहीं है जो तुम्हारी सहायता करेगा, और विश्वास करने वालो ईश्वर पर भरोसा रखो।" (कुरआन 3:160)

"आप कह दें "वही मेरा ईश्वर है और उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है। मैंने उसी पर भरोसा किया है और मुझे उसी के पास जाना है।" (कुरआन 13:30)

"और हम निश्चिंता रूप से सभी दुखों को धैर्य से सहेंगे... और भरोसा करने वालों को सिर्फ ईश्वर पर ही निर्भर रहना चाहिए।" (कुरआन 14:12)

आसक्तियों का ईश्वर पर विश्वास किसी भी परिस्थिति में एक समान होना चाहिए चाहे वो अच्छी हो, बुरी हो, आसान हो या कठिन हो। इस दुनिया में जो कुछ भी होता है वह ईश्वर की अनुमति से होता है। वही जीविका देता है और वह इसे वापस लेने में भी सक्षम है। वह जीवन और मृत्यु का स्वामी है। ईश्वर तय करता है कि हम अमीर होंगे या गरीब और स्वस्थ होंगे या बीमार। हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने हमें प्रयास करने और प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की जो हमारे लिए अच्छा है। हमारी परिस्थितियों कैसी भी हों, हमें उनके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उसकी स्तुति करनी चाहिए। हमें अपनी कठिनाइयों को धैर्य के साथ सहना चाहिए और सबसे बढ़कर हमें ईश्वर से प्रेम और उस पर विश्वास करना चाहिए। जब जीवन अंधकारमय और कठिन हो जाए तो हमें ईश्वर से और अधिक प्रेम करना चाहिए; जब हमें उदासी और चिंता हो तो हमें ईश्वर पर और अधिक भरोसा करना चाहिए।

फुटनोट:

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/3566>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।